بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-30.06.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के लिए तय्यारी के वृत्तांत व घटनाएँ तथा आँहूज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम विनय पूर्ण दुआओं का बयान।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिरिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 30 जून 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

सवाद बिन ग़ज़िया के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ की आश्चर्यजनक अभिव्यक्ति का वृत्तांत पिछले ख़ुत्बः में बयान हुआ था। उस हवाले से आगे का वर्णन इस प्रकार है कि सवाद उस युद्ध में विजयी शान के साथ लौटे तथा मुशरिकों में से एक व्यक्ति ख़ालिद बिन हिश्शाम को बन्दी बनाया। बाद में आँहूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें ख़ैबर की लड़ाई में हाथ आई सम्पत्ति जमा करने के लिए कार्यकर्ता भी बनाया।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस घटना का वर्णन यूँ फ़रमाया है कि रमज़ान 2 हिजरी की 17 तारीख़ और जुम्अः का दिन था, सुबह सबसे पहले नमाज़ अदा की। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिहाद के विषय पर ख़ुत्बः इरशाद फ़रमाया। फिर कुछ उजाला हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक तीर द्वारा मुसलमानों की पंक्तियों को व्यवस्थित करना शुरु किया। एक सहाबी सवाद नामक पंक्ति से कुछ आगे निकला खड़ा था। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीर के संकेत से उसे पीछे हटने को कहा, परन्तु संयोगवश उस तीर की लकड़ी उस सहाबी की छाती पर जा लगी। उस सहाबी ने साहसपूर्ण शैली में निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपको अल्लाह तआला ने हक़ एवं न्याय के साथ नियुक्त फ़रमाया है,

किन्तु आपने मुझे अकारण ही तीर मारा है, वल्लाह ! मैं तो इसका बदला लूँगा। इस पर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- ठीक है सवाद, तुम भी मुझे तीर मार लो। यह कहकर आपने अपने सीने से कपड़ा उठा दिया। सहाबी परेशान थे कि सवाद को यह क्या हुआ। सवाद ने स्नेह के आवेग से आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छाती को चूम लिया। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुस्कुराते हुए पूछा कि सवाद यह तुम्हें क्या सूझी? सवाद ने दर्द भरी वाणी में निवेदन पूर्वक कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुश्मन सामने है, कुछ पता नहीं कि यहाँ से बचकर जाना मिलता है कि नहीं, मैंने चाहा कि शहादत से पहले आपके दिव्य शरीर से अपना शरीर छू जाऊँ।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सेना की पंक्तियों को सीधा कर लिया तो सहाबियों रज़ी. को फ़रमाया- जब तक मैं तुम्हें आदेश न दूँ, दुश्मन पर हमला न करना, तलवारें उस समय तक न निकलाना जब तक कि दुश्मन अत्यंत निकट न आ जाए। आप स. ने ख़ुत्बः में जिहाद तथा धैर्य की प्रेरणा दी तथा फ़रमाया- कठिनाई के समय धैर्य रखने से अल्लाह तआला कठिनाई को दूर फ़रमाता है और दुःखों से मुक्ति प्रदान करता है। एक स्थान पर आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह ख़ुत्बः जो है इसका विवरण इस प्रकार बयान हुआ है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की स्तुति बयान की और फ़रमाया कि मैं तुम्हें इस बात पर उभारता हूँ जिस पर अल्लाह तआला ने उभारा है और उस चीज़ ने तुम्हें मना करता हूँ जिससे उसने तुम्हें मना किया है। अल्लाह तआला जो बुज़ुर्ग व बरतर है वह तुम्हें हक़ का आदेश देता है तथा सत्य को पसन्द करता है तथा दिव्य पुरुषों को बुलन्द स्तर प्रदान करता है। कठोर अवसरों पर धैर्य ऐसी चीज़ है जिसस अल्लाह कष्ट को दूर कर देता है, दुःख के मुक्ति देता है। धैर्य रखने के कारण आख़िरत में मुक्ति मिलेगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है- अल्लाह की नाराज़गी तुम्हारी आपस की नाराज़गियों से अधिक बड़ी थी। उस चीज़ की ओर देखो जिसका उसन तुम्हें किताब में आदेश दिया है और उसने तुम्हें अपने निशान दिखाए तथा अपमान के बाद तुम्हें सम्मान प्रदान किया। अल्लाह का दामन मज़बूती से थाम लो कि वह तुमसे प्रसन्न हो जाए। इस जगह तुम अपने रब की परीक्षा पर पूर्णतः सफल हो जाओ, तुम उसकी दया एवं मग़फ़िरत के अधिकारी हो जाओगे जिसका उसने तुमसे वादा किया है। उसका वादा हक़ है, उसकी बात सच है, उसका दंड कठोर है। मैं तथा तुम लोग अल्लाह के साथ हैं जो अनन्त से जीवित है एवं सदैव स्वयं स्थाई, अनश्वर है। हम उससे अपनी विजय के लिए प्रार्थना करते हैं, उसका दामन थामते हैं, उसी पर भरोसा करते हैं, उसी की ओर लौट कर जाना है, अल्लाह तआला हमें तथा मुसलमानों को क्षमा प्रदान करे।

हज़रत इब्ने अब्बास बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने युद्ध वाले दिन सहाबियों रज़ी. से फ़रमाया कि मुझे पता चला है कि बनू हाशिम तथा कुछ अन्य लोग मुशरिकों के साथ विवशता पूर्वक आए हैं, वे हमसे लड़ना नहीं चाहते। अतः तुममें से जो कोई बनू हाशिम के किसी आदमी से मिले तो वह उसकी हत्या न करे, जो अबुल बख़तरी से मिले वह उसका वध न करे, जो

अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से मिले वह भी उनकी हत्या न करे। इसी प्रकार कुछ ऐसे लोग भी उस सेना में शामिल हैं जिन्होंने मक्का में हमारी दुविधाओं के समय हमारे साथ सज्जनता का व्यवहार किया था तथा हमारा कर्त्तव्य है कि उनके उपकार का बदला उतारें, उनकी उस सज्जनता के कारण जो मक्का में करते रहे मुसलमानों से। अतः यदि किसी ऐसे व्यक्ति पर कोई मुसलमान ग़ल्बः पाए तो उसे किसी प्रकार की हानि न पहुंचाए।

अबू हुज़ैफ़ा ने इस पर कहा कि यह कैसे हो सकता है कि हम अपने भाई बन्दों का तो वध करें परन्तु अब्बास की हत्या न करें। बाद में हज़रत अबू हुज़ैफ़ा अपनी इस बात को याद करके बड़ा खेद जताया करते और कहते कि केवल शहादत ही इस ग़लती का बदला हो सकती है। अतः अबू हुज़ैफ़ा यमामा की लड़ाई वाले दिन शहीद हो गए।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन निर्देशों के बाद पुनः सायबान (छप्पर जैसा विश्राम कक्ष) में तशरीफ़ ले गए तथा दुआओं में विलीन हो गए। क़िबले की ओर मुंह करके आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊँची आवाज़ से अपने रब को पुकारते रहे, यहाँ तक कि आपकी चादर कंधों से गिर गई। हज़रत अबू बकर रज़ी. आपके निकट आए, आपकी चादर उठाई और दोबारा कंधों पर डाल दी। फिर हज़रत अबू बकर रज़ी. आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पीछे से चिमट गए तथा निवेदन पूर्वक कहा कि ऐ अल्लाह के नबी! आपकी अपने रब से की गई यह दुआ काफ़ी है, वह आपसे किए हुए वादे अवश्य पूरे फ़रमाएगा।

जब काफ़िरों ने पूरा हमला कर दिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़ुदा के समक्ष बड़ी व्याकुलता के साथ दुआ की-

ऐ मेरे अल्लाह! अपने वादों को पूरा कर। ऐ मेरे मालिक! यदि मुसलमानों की यह जमाअत आज नष्ट हो गई तो दुनिया में तुझे प्जने वाला कोई नहीं रहेगा। इस दुआ के समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इतना अधिक व्याकुल थे कि कभी सजदे में गिर जाते और कभी खड़े होकर ख़ुदा को पुकारते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुर्आन में आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बार बार विजय मिलने का वादा दिया गया था। परन्तु जब बदर की लड़ाई शुरु हुई, जो इस्लाम की पहली लड़ाई थी तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने रोना तथा दुआ करना शुरु किया और रोते रोते ये शब्द आपकी ज़बान से निकले कि ऐ मेरे ख़ुदा! यदि आज तू ने इस जमाअत को जो केवल तीन सौ तेरह आदमी थे, हलाक कर दिया तो फिर क़यामत तक कोई तेरी बन्दगी नहीं करेगा।

जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सायबान में दुआ कर रहे थे तो आपको ऊंघ आ गई फिर सहसा जाग गए तथा फ़रमाया ऐ अबू बकर! ख़ुश हो जाओ, तुम्हारे परवरदिगार की सहायता आ गई है। यह देखो जिब्रईल अपने घोड़ों की बाग थामे उसे चलाते चले आ रहे हैं, उसके पाँव पर धूल के निशान हैं।

बदर के मैदान में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुबैर बिन अवाम को मैमूना पर, मिक़दाद उमरू को मैसरा पर, क़ैस को पैदल सेना पर अफ़सर नियुक्त किया। सेना की इमामत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ में थी, आप अगली पंक्तियों में थे। हज़रत अली रज़ी. कहते हैं कि हम युद्ध वाले दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आड़ लेते थे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुश्मन से निकटतम दूरी पर थे, सब मुजाहिदों से अधिक हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम युद्ध करने वाले थ।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. बयान करते हैं कि जब सेनाएँ बिल्कुल आमने सामने आ गईं तो यह अल्लाह के विधान की विचित्र लीला है कि उस समय सेना के खड़े होने की अवस्था ऐसी थी कि इस्लामी सेना क़ुरैश को दोगुनी दिखाई देती थी। जबकि दूसरी ओर क़ुरैश की सेना मुसलमानों को अपनी वास्तविक संख्या से कम दिखाई देती थी। क़ुरैश के सरदारों ने उमैर बिन वहब को इस उद्देश्य से भेजा कि वह मुसलमानों की सेना का सटीक आंकलन कर सके। उमैर पर मुसलमानों का ऐस प्रताप एवं रौब तारी हुआ कि वह पूर्णतः निराश होकर काफ़िरों की ओर लौटा तथा क़ुरैश को सम्बोधित करके कहा कि-

ऐ क़ुरैश के समाज! मैंने देखा है कि मुसलमानों की सेना में ऊँटनियों ने अपने ऊपर आदमियों को नहीं, बल्कि मौतों को उठाया हुआ है। क़ुरैश ने जब यह सुना तो उनमें व्याकुलता फैल गई।

हकीम बिन हिज़ाम ने यह बात सुनी तो उतबा बिन रबीअः के पास आया और उतबा को वापस चलने का सुझाव दिया। उतबा तो स्वयं डरा हुआ था, उसने इस सुझाव को उचित समझा और हकीम को कहा कि हम तथा मुसलमान आपस में रिश्तेदार ही तो हैं। क्या यह अच्छा लगता है कि भाई भाई पर तलवार उठाए। अतः तुम अबू जहल के पास जाओ तथा उसके सामने यह सुझाव पेश करो। जब हकीम बिन हिज़ाम ने अबू जहल के सामने यह सुझाव रखा तो वह तुरन्त बोला- अच्छा अच्छा! अब उतबा को अपने सामने अपने रिश्तेदार दिखाई देने लगे हैं। फिर अबू जहल ने रणनीति के साथ इस सुझाव को ऐसे रद्द किया कि काफ़िरों की सेना की छाती में दुश्मनी की आग भड़क उठी और युद्ध की भट्टी अपने पूरे ज़ोर के साथ दहकने लगी।

ख़ुत्बः के अन्त में हुजूरे अनवर ने फ़रमाया कि युद्ध शुरु होने का शेष विवरण आगे बयान होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131